AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य एंव विकलांग विधार्थियों के व्यक्तित्व गुणों, आत्म प्रत्यय एंव शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

रजनी अग्रवाल, डॉ. कालंदी लाल चंदानी

शोध छात्रा, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत
शोध निर्देशिका, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER/ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATIONIN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/PLAGIARISM/ OTHERREAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NO TBE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THEJOURNAL

सारांशः

अध्ययन का शीर्षक "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विकलांग एवं सामान्य छात्रों की व्यक्तित्व गुणों, आत्म प्रत्यय एंव शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत विकलांग एवं सामान्य छात्रों की व्यक्तित्व गुणों, आत्म प्रत्यय एंव शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के विषय की समस्या की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक शोध के अन्तर्गत "सर्वेक्षण विधि" का प्रयोग किया गया है। वर्तमान अध्ययन में जनपद बिजनौर दिव्यांग एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में माना गया है। अध्ययन के उद्देश्य से जनपद बिजनौर जिले में स्थित दिव्यांग एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 100–100 विद्यार्थियों का स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। वर्तमान अध्ययन में डेटा विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन और टी–अनुपात का उपयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह पाया गया है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विकलांग छात्रों एवं सामान्य छात्रों के व्यक्तित्व गुणों, आत्म प्रत्यय एंव शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया जाता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

कीवर्ड: माध्यमिक स्तर, विकलांग, सामान्य छात्र,

भूमिका:

जीवन स्थूल शरीर और सूक्ष्मतम चेतना का अलौकिक समामेलन है। पदार्थ और आकार की सतह पर, दुनिया में हर जीव आपस में अलग है। सृष्टि में उपस्थित प्रत्येक प्राणी में कुछ विशेष योग्यताएँ होती हैं जो पर्यावरण के साथ उनके अनुकूलन को सुनिश्चित करती हैं, इन्हीं क्षमताओं के कारण मनुष्य को प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। क्योंकि एक व्यक्ति अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को इस तरह विकसित करने में सक्षम होता है कि वह खुद को पर्यावरण के साथ एक अनोखे तरीके से समायोजित कर लेता है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है जो समाज में रहता है। समाज में विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय, लिंग, रुचि, संस्कृति, भाषा, शारीरिक बनावट आदि के लोग रहते हैं। समाज में एक वर्ग ऐसा भी है जो अपनी विशेष स्थिति, अक्षमता या शारीरिक और मानसिक स्थिति के कारण अन्य लोगों से इतना अलग है कि वह समाज की मुख्य धारा से अलग हो जाता है। प्राचीन रीति–रिवाजों, परंपराओं और मान्यताओं के अनुसार, इस चरण को पिछले जन्मों का परिणाम माना जाता था और इस वर्ग को समाज में उपेक्षित माना जाता था। उस समय यह वर्ग ईर्ष्या और आश्रित जीवन जीने को विवश था। लेकिन सामाजिक बदलाव के साथ इस वर्ग के बारे में आम लोगों में जागरूकता आई और उनकी सोच भी बदल गई। अब वे यह मानने के लिए तैयार हैं कि विकलांगता पिछले जन्मों का परिणाम नहीं है बल्कि यह हमारे द्वारा की गई गलतियों का परिणाम है। सामाजिक दर्शन में परिवर्तन के कारण इन बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास शुरू किया गया। इस क्षेत्र में चिंतन, मनन और शोध के परिणामस्वरूप यह बात सामने आई है कि विशेष बच्चों में भी कुछ नैसर्गिक क्षमताएं होती हैं और यदि इस शेष क्षमता को ठीक से शिक्षित, प्रशिक्षित किया जाए तो ऐसे बच्चे भी अपनी शेष क्षमता को प्राप्त कर सकते हैं। उचित उपयोग द्वारा समाज में समायोजन स्थापित करके व्यक्ति समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने ठीक ही कहा था, ''हम जो हैं उसके लिए हम जिम्मेदार हैं और हमारे पास खुद को वह बनाने की शक्ति है जो हम बनना चाहते हैं।'' इस संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो एक निःशक्त व्यक्ति थोड़े से सहारे से किसी अन्य व्यक्ति की तरह नहीं कर सकता। हालांकि, ऐतिहासिक रूप से, गलत धारणाएं समाज में विकलांग व्यक्तियों की स्थिति को कम करने के लिए जिम्मेदार रही हैं और आम तौर पर खुद को मुख्यधारा से बाहर पाती हैं। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, यह उपयुक्त होगा कि जो बच्चे कल के भविष्य के नागरिक हैं, वे कम उम्र से ही विकलांगता के मुद्दों के बारे में अपनी समझ विकसित करें, जिसका उद्देश्य एक समावेशी समाज और विकलांग व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता है और सहानुभूति की भावना सुनिश्चित करेगा विकलांगता के मुद्दों पर समाज के विभिन्न वर्गों के लोग।

क्रुइशांक (1951) ने पाया कि विकलांग किशोरों ने अपने गैर–विकलांग साथियों की तुलना में अपराधबोध और भय की भावनाओं को अधिक व्यक्त किया। दो एमएमपीआई अध्ययनों के परिणाम हार्पर, 1978य हार्पर एंड रिचमैन, 1978) ने अस्थायी रूप से इस परिकल्पना का समर्थन किया कि शारीरिक रूप से विकलांग किशोर समायोजन समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और वे एक बाधित, बल्कि निराशावादी व्यक्तित्व शैली की ओर रुख करते हैं। जिस सामाजिक वातावरण से बच्चे को अवगत कराया जाता है वह महत्वपूर्ण कारकों में से एक हैय मैकगिनीज (1970) ने विभिन्न शैक्षिक सेटिंग्स में विकलांग बच्चों की सामाजिक परिपक्वता की तुलना करने के लिए विनलैंड स्केल का इस्तेमाल किया, जिसमें यात्रा शिक्षक, एकीकृत स्कूल और विशेष स्कूल सेटिंग्स शामिल हैं। विषय चैथी से छठी कक्षा तक के थे, जिनमें अत्यधिक प्रकाश की धारणा थी, जिनमें से अधिकांश जन्म से ही विकलांग थे। तीनों समूहों ने देखे गए मानदंडों से कुछ कम स्कोर दिखाया। उन्होंने यह भी पाया कि यात्रा करने वाले शिक्षक और एकीकृत सेटिंग्स में बच्चों ने विशेष स्कूल सेटिंग के बच्चों की तुलना में उच्च सामाजिक परिपक्वता स्कोरध्उम्र उपयुक्त व्यवहार दिखाया, यह सुझाव देता है कि यह परिणाम विशेष स्कूल सेटिंग में बच्चों द्वारा उम्र के उपयुक्त व्यवहार के साथ संपर्क की सापेक्ष कमी के कारण था, और विशेष स्कूल सेटिंग में विशेष सहायता की उपलब्धता पर अधिक ध्यान देना। संभवतः यह बच्चों पर

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

अपनी समस्याओं को हल करने के लिए कम आवश्यकताओं को रखता है। एकीकृत स्कूल सेटिंग दृष्टिबाधित बच्चे को जीवन समायोजन के लिए आवश्यक अनुकूली व्यवहार और मुकाबला कौशल के वास्तविकता परीक्षण का अवसर प्रदान करती है (मैरोन, 1977)। इस प्रकार मैकगिनीज के दिलचस्प परिणाम जरूरी नहीं कि स्कूल के प्रकार का एक कार्य है, बल्कि किसी भी स्कूल में उन लोगों के प्रकार हैं, जो दृष्टिबाधित बच्चों के साथ काम करते हैं।

इनमें विकलांग और गैर–विकलांग युवाओं के बीच लगातार मनोवैज्ञानिक अंतर के कुछ नियंत्रित प्रदर्शन शामिल हैं। इन बच्चों और उनके परिवारों द्वारा अनुभव की गई समायोजन कठिनाइयों के विवरण के साथ नैदानिक साहित्य का पता चला। फिर भी, दूसरी ओर, उपलब्ध साक्ष्यों का बड़ा हिस्सा बताता है कि ऐसी कठिनाइयाँ अपरिहार्य नहीं हैं और यह कि विकलांग लोग आवश्यक रूप से व्यक्तित्व या आत्म–अवधारणा में एक दूसरे के समान होते हैं (एलन एंड पियर्सन (1928); लेवी एंड माइकलसन (1952)य राइट, मायर्सन एंड गोनिक (1953); प्रिंगल (1964); कैमरन, वैन होएक, वीस एंड कोस्टिन (1971)य शोंटज (1971), (1975); क्लिफोर्ड (1973); हेवेट (1976); रोशर एंड हॉवेल (1978) हैरिस (1979) का मत था कि यदि विकलांग छात्र द्वारा हर बार सहायता मांगे बिना सामग्री या उपकरणों का उपयोग या हेरफेर करना आसान है, तो इससे ऐसे छात्रों को स्वतंत्रता और आत्म–मूल्य की भावना विकसित करने में मदद मिलेगी। शर्मा (1979) ने ध्यान केंद्रित किया शैक्षणिक उपलब्धि में कारक के रूप में आत्म–अवधारणा, आकांक्षा के स्तर और मानसिक स्वास्थ्य पर। उत्तर प्रदेश के स्कूलों के ग्ए Xi~&XIi~ ग्रेड से यादृच्छिक रूप से चुने गए 1060 छात्रों के नमूने का अध्ययन किया गया। परिणामों ने बताया कि लड़कों और लड़कियों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर था प्रारंभिक किशोरावस्था (13 वर्ष) के दौरान, जबकि लड़के देर से किशोरावस्था ने लड़कियों की तुलना में बेहतर मानसिक स्वास्थ्य दिखाया। स्कूल में, इस बात पर ध्यान दिए बिना कि चुनौती वाला बच्चा किस प्रकार के कार्यक्रम में शामिल है, यह सहकर्मी समूह है जिसने सुरक्षा का आधार प्रदान किया है जो परिवार ने पहले प्रदान किया था। सहकर्मी समूह बच्चों को एक समूह के सदस्यों के रूप में खुद को परिभाषित करने, संबंध बनाने, समानों के साथ बातचीत करने और

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

यह महसूस करने का अवसर प्रदान करते हैं कि वे दूसरों के लिए महत्वपूर्ण हैं (न्यूमैन, 1982)। Ndurumo (1980) ने श्रवण बाधित हाई स्कूल के छात्रों की आत्म–अवधारणा के मुख्यधारा के प्रभावों की जांच करने के लिए एक अध्ययन किया और टेनेसी स्व–अवधारणा पैमाने को 25 पूरी तरह से मुख्यधारा वाले श्रवण बाधित छात्रों और 36 श्रवण बाधित छात्रों में नामांकित करके टेनेसी स्व–अवधारणा पैमाने का प्रशासन करके लोगों को सुनने की उनकी धारणा की जांच की। बधिरों के लिए आवासीय विद्यालय। इससे यह पता चलता है कि (i) मुख्यधारा और आवासीय दोनों स्कूलों में श्रवण बाधित छात्रों में सामान्य श्रवण आबादी की तुलना में नकारात्मक आत्म–अवधारणा की पुष्टि की गई थी। (ii) मुख्यधारा के श्रवण बाधित छात्रों में गैर–मुख्यधारा के छात्रों की तुलना में बेहतर आत्म–अवधारणा है

समस्या कथनः

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों, आत्म प्रत्यय एवं शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन जनपद बिजनौर में सर्वेक्षण आधारित

अध्ययन के उद्देश्यः

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों, आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

परिकल्पना :

1. "माध्यमिक में अध्ययनरत विकलांग बालकों एवं सामान्य बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत की जाती है।
2. "माध्यमिक में अध्ययनरत विकलांग बालकों एवं सामान्य बालकों के समायोजन के आयाम ' आत्म–प्रत्यय ' में सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत की जाती है।
3. "माध्यमिक में अध्ययनरत विकलांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत की जाती है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

अनुसंधान अभिकल्प:

प्रस्तुत अध्ययन में समय एवं संसाधनों की सीमा को दृष्टिगत रखते हुए उत्तर प्रदेश के जनपद बिजनौर में स्थित माध्यमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की कनिष्ठ कक्षाओं में अध्ययनरत 100 विकलांग एवं सामान्य 100 सामान्य बच्चे। नमूने के रूप में चुना गया था। इसके लिए जनपद बिजनौर में स्थित दृष्टिहीन विद्यालयों एवं सामान्य विद्यालयों की सूची बनाकर इस सूची में से 3 दृष्टिहीन विद्यालयों एवं 10 सामान्य विद्यालयों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया, फिर इन विद्यालयों की कनिष्ठ कक्षाओं में अध्ययनरत दृष्टिहीन एवं सामान्य विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन सूचियों में से छात्राओं की अलग–अलग सूची, 100 नेत्रहीन और 100 सामान्य छात्रों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था, जिसका विवरण नीचे दी गई तालिका में वर्णित है।

नमूना विवरण:

तालिका संख्या:1

नमूना विवरण

स्मूह	छात्र	छात्रा	योग
विकलांग	50	50	100
सामान्य	50	50	100
योग	100	100	200

अध्ययन के लिए चयनित विद्यालयों की सूची:

1. आशादीप – विकलांग केंद्र, दोदराजपुर, खजुवा, नगीना रोड, बिजनौर, भारत, उत्तर प्रदेश

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

2. प्रियंका मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल धामपुर रोड, धामपुर, बिजनौर
3. राज विकलांग विद्यालय, 141 ए, एलगिन रोड, सिविल लाइन, बिजनौर
4. अरुनिमा विकलांग स्कूल, लाउदर रोड,, बिजनौर
5. जीवन ज्योति विकलांग विद्यालय, अकथा, बिजनौर

अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरणः

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संग्रहण के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है। उपयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का . प्रयोग किया गया।

1– आइजैक व्यक्तित्व प्रश्नावली (Eysenck Personality Questionnair Eysenck &Eysenck] 1978) Singh & Sharma] 1984

2– बाल समायोजन सूची (Children*s Adjustment Inventory] Dr- T- S- Rao] 1975)

3– शैक्षिक उपलब्धि

तालिका संख्या :2

विकलांग एवं सामान्य बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	सी०आर० मान	सार्थकता स्तर	
					0.05	0.01
विकलांग	100	59.15	13.82	3.25	+	+
सामान्य	100	64.81	11.11			

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

उपरोक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि विकलांग बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्वका मध्यमान 59.15 है तथा मानक विचलन 13.82 है, इसी प्रकार सामान्य बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्वका मध्यमान 64.81 है तथा मानक विचलन 11.11 है। इनका सी0 आर0 मान 3.25 पाया गया जो सार्थकता स्तरों .05 एवं .01 पर आवश्यक मान से अधिक है तथा यहाँ पर सामान्य बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्वका मध्यमान, विकलांग बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्वके मध्यमान की अपेक्षा अधिक है। अतः स्पष्ट है कि विकलांग बालकों एवं सामान्य बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के मध्यमान में सार्थक अन्तर है तथा सामान्य बालक विकलांग बालकों की अपेक्षा उच्च व्यक्तित्व के हैं।

अतः यहाँ पर परिकल्पना संख्या – "माध्यमिक में अध्ययनरत विकलांग बालकों एवं सामान्य बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत की जाती है।

विकलांग एवं सामान्य बालकों के आत्म–प्रत्यय के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की तालिका

तालिका संख्या :3

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	सी०आर० मान	सार्थकता स्तर	
					0.05	0.01
विकलांग	100	16.55	8.08	3.19	+	+
सामान्य	100	13.29	6.46			

उपरोक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि विकलांग बालकों के आत्म–प्रत्यय का मध्यमान 16.55 है तथा मानक विचलन 8.08 है, इसी प्रकार सामान्य बालकों के प्रत्याहार प्रवृत्तियों का मध्यमान 13.29 है तथा मानक विचलन 6.46 है। इनका सी0 आर0 मान 3.19 पाया गया जो सार्थकता स्तरों .05 एवं .01 पर आवश्यक मान से अधिक है तथा यहाँ पर विकलांग बालकों के प्रत्याहार प्रवृत्तियों का मध्यमान, सामान्य बालकों के प्रत्याहार प्रवृत्तियों के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है। अतः स्पष्ट है कि विकलांग बालकों एवं सामान्य बालकों के प्रत्याहार प्रवृत्तियों के मध्यमान में सार्थक अन्तर है तथा विकलांग बालक सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक प्रत्याहार प्रवृत्तिया रखते हैं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

अतः यहाँ पर परिकल्पना " माध्यमिक में अध्ययनरत विकलांग बालकों एवं सामान्य बालकों के समायोजन के आयाम ' आत्म–प्रत्यय' में सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत की जाती है।

तालिका संख्या :4

विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्रों एवं छात्राओं की संख्या एवं X^2 (काई स्क्वायर) की तालिका

समूह	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	योग	X^2	सार्थकता स्तर	
						0.05	0.01
विकलांग	30	50	20	100	0.55	-	-
सामान्य	30	51	19	100			
योग	60	101	39	200			

उपरोक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि विकलांग विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वालों की संख्या 30, द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वालों की संख्या 50 और तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वालों की संख्या 20 है। इसी प्रकार सामान्य विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वालों की संख्या 30, द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वालों की संख्या 51 और तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वालों की संख्या 19 है। इनके X^2का मान 0.55 प्राप्त हुआ जो .05 एवं .01 सार्थकता के स्तरों पर आवश्यक सार्थक मान से कम है। अतः स्पष्ट है कि विकलांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः यहाँ पर परिकल्पना "माध्यमिक में अध्ययनरत विकलांग विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों के सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

- परिकल्पना संख्या **- 1** के सन्दर्भ में निष्कर्ष यह रहा कि सामान्य बालकों में, विकलांग बालकों की अपेक्षा व्यक्तित्व गुणों की अधिकता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व के मामले में सामान्य बालक, विकलांग बालकों की अपेक्षा उच्च स्तर के व्यक्तित्व क्षमता वाले हैं। इसका कारण विकलांग बालकों का उनकी दृष्टि सम्बन्धी अपूर्णता हो सकती है अथवा उनका अपर्याप्तता एवं हीन भावना से ग्रसित होना हो सकता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

- परिकल्पना संख्या - 2 के सन्दर्भ में निष्कर्ष यह रहा कि सामान्य एवं विकलांग बालकों के समायोजन के द्वितीय आयाम, आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया और विकलांग बालकों में सामान्य बालको की की अपेक्षा प्रत्याहार प्रवृत्तियों की अधिकता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि विकलांग बालक सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक प्रत्याहार प्रवृत्तियों वाले हैं। इसका कारण अंधेपन के कारण विकलांग बालकों का सामाजिक बिलगाव होना हो सकता है।
- परिकल्पना संख्या – 3 के सन्दर्भ में निष्कर्ष यह रहा कि सामान्य एवं विकलांग बालकों के के सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि विकलांग बालक एवं सामान्य बालक दोनों में एक समान शैक्षिक उपलब्धि हैं। इसका कारण दोनो का अपने–अपने विद्यालयों का पाठ्यक्रम एवं परीक्षा हो सकती हैं।

सन्दर्भ

[1]. बी. शखेर 1989–92, राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान, बिकानेर, शिक्षा विभाग राजस्थान,

[2]. बसन्त बहादुर सिंह 2013, शिक्षा शास्त्रे, आगरा, उपकार प्रकाशन

[3]. बेस्ट जे. डब्लयू, 1950, शिक्षा में शोध कार्य,नई दिल्ली, प्रिन्टाइस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0

[4]. बेस्ट जे. डब्लयू, 1963, शिक्षा में शोध कार्य,नई दिल्ली, प्रिन्टाइस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0 हरीनारायण पालीवाल

[5]. भार्गव उशा 1987, किशोर मनोविज्ञान, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

[6]. भटनागर आर. पी. 1955, शिक्षा में अनुसंधान एवं विष्लेशण, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर

[7]. भटनागर,कुमार,प्रभदू याल शर्मा, 2008, ''शिक्षक–शिक्षा में षिक्षण एवं नवाचार'', लाडनूं जनै विश्व भारती संस्थान

[8]. रायजादा,बी.एस., 2006,''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'', जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

[9]. व्यास जगदीषचन्द्र 1988,''क्रियात्मक अनुसंधान संप्रत्यय और प्रक्रिया'', उदयपुर, श्रेयां संस्थान प्रकाशन,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

[10]. राजस्थान पत्रिका (अप्रेल 2016) ''निषक्त जनों को दिव्यांग कहेंगे''।

[11]. दैनिक भास्कर (अप्रेल 2016) ''निषक्त जनों को दिव्यांग कहेंगे''।

[12]. दैनिक नवज्योति (अप्रेल 2016) ''अब निषक्त जनो को कहेंगे दिव्यागं जन''।

[13]. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 21, अंक जनवरी –जून 2002

[14]. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 23, अंक जुलाई– दिसम्बर 2004

*****